2017-18

MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

Vidyawarta®

International Multilingual Research Journal

July To Sept. 2017
Issue-19, Vol-07

Editor
Dr. Bapu g. Gholap
(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

विद्येविना मति गेली, मतीविना नीति गेली
नीतिविना गति गेली, गतिविना वित्त गेले
वित्तविना शूद्र खचले, इतके अनर्थ एका अविद्येने केले

-महात्मा ज्योतीराव फुले

❖ विद्यावार्ता या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. न्यायक्षेत्र:बीड

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat.**

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

Vidyawarta™

International Multilingual Research Journal

Editorial Board & Advisory Committee

1) Dr. Vikas Sudam Padalkar (Japan)
2) M.Saleem, Sialkot (Pakistan)
3) Dr. Momin Mujtaba (Saudi Arebia)
4) N.Nagendrakumar (Sri Lanka)
5) Dr. Wankhede Umakant (Maharashtra)
6) Dr. Basantani Vinita (Pune)
7) Dr. Upadhya Bharat (Sangali)
8) Jubraj Khamari (Orissa)
9) Krupa Sophia Livingston (Tamilnadu)
10) Dr. Wagh Anand (Aurangabad)
11) Dr. Ambhore Shankar (Jalna)
12) Dr. Ashish Kumar (Delhi)
13) Prof.Surwade Yogesh (Satara)
14) Dr. Patil Deepak (Dhule)
15) Dr. Singh Rajeshkumar (Lucknow)
16) Tadvi Ajij (Jalgaon)
17) Dr.Patwari Vidya (Jalna)
18) Dr.Varma Anju (Gangatok)
19) Dr.Padwal Promod (Waranasi)
20) Dr.Lokhande Nilendra (Mumbai)
21) Dr.Narendra Pathak (Lucknow)
22) Dr.Bhairulal Yadav (West Bangal)
23) Dr.M.M.Joshi, (Nainital)
24) Dr.Sushma Yadav (Delhi)
25) Dr.Seema Sharma (Indor)
26) Dr. Choudhari N.D. (Kada)
27) Dr. Yallawad Rajkumar (Parli v.)
28) Dr. Yerande V. L.(Nilanga)
29) Dr. Awasthi Sudarshan (Parli v.)
30) Vipin Pandey, Kanpur (U.P.)
31) Dr. Rajendra Acharya (Parli v.)
32) Manmeet Kaur (Uttrakhand)
33) Dr. Vidya Gulbhile (M.S.)
34) Dr. Kewat Ravindra (Chandrapur)
35)Dr. Pandey Piyush (Delhi)
36) Dr. Suresh Babu (Hydarabad)
37) Dr. Patel Brijesh (Gujrat)
38) Dr. Trivedi Sunil (Gujrat)
39) Dr. Sarda Priti (Hydarabad)
40) Dr. Nema Deepak (M.P.)
41) Dr. Shukla Neeraj (U.P.)
42) Dr. Namdev Madumati (M.P.)
43) Dr. Kachare S.V. (Parli-v)
44) Dr. Singh Komal (Lucknow)
45) Dr. Pawar Vijay (Mumbai)
46) Dr. Chaudhari Ramakant (Ja

Indexed

International Multilingual Research Journal Vidyawarta Jr.No.62759 UGC Approved Refereed Journal

IMPACT 4.014 iijif FACTOR

Govt. of India,
Trade Marks Registry
Regd. No. 2611690

Note : The Views expressed in the published articles,Research Papers etc. are their writers own. 'Printing Area' dose not take any libility regarding appoval/disapproval by any university, institute,academic body and others. The agreement of the Editor, Editorial Board or Vidyawarta is not necessary. Disputes, If any shall be decided by the court at **Beed** (Maharashtra, India)

www.vidyawarta.com

❖विद्यावार्ता: Interdisciplinary Multilingual Refereed Journal Impact Factor 4.014 (IIJIF)

40) ग्रामीण सामाजिक विकास में नवा अंजोर परियोजना की भूमिका का अध्ययन
डॉ महेन्द्र शर्मा, दुर्ग || 157

41) 'कवी नागार्जुन' के काव्य में प्रगतिशील चेतना
डॉ. मिर्झा असद बेग रुस्तुम बेग, बीड || 163

42) समावेशी शिक्षा के अन्तर्गत विशेष आवश्यकता वाले बालक– बालिकाओं का सामान्य ...
डॉ. अर्चना अग्रवाल, रायसेन || 165

43) शैक्षिक विकास में निरक्षरता उन्मूलन कार्यक्रमों का योगदान
डॉ. अनीता जायसवाल, बरेली || 170

44) उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का उनके लिंग एवं क्षेत्र के आधार पर ...
सुधीर कुमार, डॉ. अरुण कुमार, उ.प्र. || 173

45) शास्त्रों का महत्त्व एवं उनकी मूल्यपरकता
डॉ. रामप्रकाश शर्मा, श्रीगंगानगर || 179

46) सम्प्रति भारत में नारी: एक सर्वेक्षण
डॉ० पुष्पेन्द्र कुमार सिंह, कानपुर || 184

https://sites.google.com/site/vidyawartajournal | http://www.vidyawarta.blogspot.com

41

'कवी नागार्जुन' के काव्य में प्रगतिशील चेतना

डॉ. मिर्झा असद बेग रुस्तुम बेग
हिंदी विभाग अध्यक्ष,
मिल्लीया कला, विज्ञान एवं व्यवस्थापन शास्त्र महाविद्यालय बीड

****

नागार्जुन अपने देश अपनी धरती और अपनी जनता के कवी है। अपने देश के लोगों के हर्ष विषाद को उनकी आशाओं आकाक्षाओं को उनके संघर्षो सपनो को उन्होंने काव्यों में गुंथा है। आधुनिक हिन्दी कविता प्रगतिशील कवियों के दूसरी पीढ़ी में आते है- नागार्जुन, केदारनाथ, अग्रवाल, त्रिलोचन, रांगेय राघव और रामविलास शर्मा आदी। प्रगतिशील जीवन की समग्रता का काव्य बनता है। उनकी कविता के सीमा में मनुष्य का वैयक्तिक और सामाजिक जीवन अपने विविध आयामों के साथ अभिव्यक्त हुआ है।

नागार्जुन का व्यक्तित्व हिंदी साहित्य में महान माना जाता है। उनकी कृतियाँ प्रगतिशील के विविध विशेषताओं से भरी हुई है। उन्होंने अधिकांश कविता में सामान्य जनजीवन तथा मध्यमवर्गीय मजदुर की जिंदगी की वाणी को उजागर किया है। इसके साथ-साथ कविताओं में देशप्रेम तथा राष्ट्रीयता का भी चित्रण हुआ है। जैसे 'भारत माता' के गाल पर कस कर पड़ा तमाचा है, रामराज्य में अबकी रावन गंगा होकर नाचा है।" नागार्जुन के काव्य में अभावों से शोषण से त्रस्त मनो के चित्र अत्याधिक मिलते है। उन्होने पूरी सहानुभूति के साथ मध्यवर्गीय जीवन को चित्रित किया है। कवी एक गरीब गर्भवती माँ और मध्यवर्गीय जीवन को चित्रित करते हुए लिखते है।

"फटी दरी पर बैठा है चिर रोगी बेटा
गगन के चावल से कंकड़ बिन रही फनी बेचारी
गर्भभर से अलस शिथिल है, अंग-अंग
मुँहपर उसके मतमैली आभा।"

`देखना ओ गंगा मैया` शीर्षक कविता में मल्लाहो के नंगे बच्चो का चित्रण करते है, जो कविता सिमित इच्छाओ की पूर्ति के उथली छिछलीधार में पैसे की तलाश कर रहे है। वे उन पैसो से बीडी पियेंगे। आम चूसेंगे। देह में साबुन की सुगंधित टिकियाँ मलेंगे। सर में चमेली का तेल लगायेंगे। हम उम्र छोकरी के लिए टिकली लायेंगे। इससे ज्यादा अनुभव में पलनेवाले उन बच्चो की इच्छाएँ हो भी क्या सकती है। वे अपने आवश्यकता या जरूरतों की पूर्ति से भी वंछित है।

'प्रेत का बयान' कविता में भूख से मरनेवाले एक अध्यापक का बयान है। अकाल और बाद का दुष्प्रभाव धनिकों को नहीं भोगना पढ़ता है। हर हाल में श्रमिक और किसान पिसता है। धनिक तो कॉफी की चुस्कियाँ लेते हुए अखबारों की छपी खबरों का जायका लेते रहते है। निम्न पंक्तियों से यह पता चलता है-

"कई दिनों तक चूल्हा रोया, चाकी रही उदास
कई दिनों तक कानी कुत्तियाँ सोई उसके पास।"

सामाजिक विषमता को उन्होंने गहराइयों से देखा और अनुभव किया है। समाज में फैली कुरीतियाँ, विकृतियाँ का और समाज की असंगतियो के यथार्थ के साथ खुली आँखों से देखा था। 'घिन तो नहीं आती' कविता में सामाजिक विषमता को व्यक्त करते हुए वे लिखते है-

"पूरी स्पीड है ट्राम खली है, दचक पे दचक
सटका है बदन। पसीने से लथपथ
सच-सच बताओ घिन तो नहीं आती है,
जी तो नहीं कुढ़ता है।"

यहाँ सामान्य गरीब की विषमता को व्यक्त करते हुए देखा जाता है तथा उसके रहन-सहन को लेकर बात को स्पष्ट करते है तो दूसरी ओर अमीरों को भी स्पष्ट कर दिया है-

"दूध सा धुला सदा लिबास है तुम्हारा
निकले हो शायद चौरंगी हवा खाने
बेठना था, पंखे निचे अगले डिब्बे में
ये तो बस इसी तरह,
सच-सच बतलाओ अखरती नहीं इनकी सोहबत।"

नागार्जुन के काव्य में एक विदेशी शासन के प्रति विद्रोह है तो दूसरी ओर भारतीय समाज में फैली हुई रूढ़ियाँ, अंध:विश्वास और परम्पराओ का विरोध हुआ है।
जैसे -

"श्रद्धा का तिकडम से नाता
जय हो भिक्षुक जय हो दाता।"

इस प्रकार नागार्जुनजी ने आर्थिक विषमता, सामाजिक विषमता तथा रूढियों का विरोध दर्शाया, ठीक उसी प्रकार नारी व्यवस्था का दर्शन भी कराया है। नागार्जुन के भस्मांकुर खंडकाव्य में नारी यथार्थ का रूप तथा समाज में नारी विषमता के साथ-साथ समाज में चल रहे बेमेल विवाह के कारण होने वाली नारी की आत्महत्या, दहेज़ पिडीत नारी की हत्या, वियोगिनी नारी की संवेदना को वाणी देने

काम किया है।

जैसे -

"आखिर वह सुकुमारी क्यों बूढ़े को करने लगी पसंद
क्या अनमेल समागम है, अनिवार्य।"

साथ हि साथ नारी के प्रति समाभाव व्यक्त करते हुए भी लिखते है।

"शिशु समान होती है नारी जाती,
मृदुमती, तरल स्वभाव।
कप, रस, गंध,
शब्द स्पर्श के प्रति अप्राण।"

कवी विद्रोह और क्रांति के साथ आशा और विश्वास के कदमोपर चलने को कहते है। देश प्रेम और मानवीय समता के साथ-साथ कवी के कविता में अंधश्रद्धा, राजकीय, छलीकपट, समसामायिक समस्याओ को स्पष्ट करनेवाली वाणी मिलती है..

कवी नागार्जुन सामाजिक यथार्थ के चितरे होने के कारण समाज में पल रही विषमता के विरोध स्वर के माध्यम से क्रान्तिकारी भाव को अपनी कविता में व्यक्त किया हैं। कवी क्रांति और विद्रोह के भावना को स्पष्ट करते हुए लिखते है की, -

"देश हमारा भूखा नंगा घायल है बेकारी से
मिले न रोटी रोजी भर के दर-दर बने भिकारी से।"

राजनैतिक व्यंगो में ऐसा कोई भी राजनैतिक प्रसंग शायद ही नागार्जुन की दृष्टी से दूर रहा है, सही मायने में नागार्जुन ऐसे सभी व्यक्तियों की निंदा करते है जो धर्म के नाम पर वेशभूषा धारण कर अपने शरीर को अनावश्यक कष्ट देते है-

"काँटोंपर नंगा सोया था
ठिठक गया मै लगा देखने
उस मौघड बाबा के करतब।"

समग्र रूप से कहाँ जा सकता है, नागार्जुन का प्रगतिशील स्वर अति तीव्र, उच्च, तथा मानवीय आग्रह से भरपूर है। नागार्जुन का यह मानवतावाद एक तरफ वैज्ञानिक चिंतन की ओर अभिमुख है तो दूसरी तरफ समाज के अंतर्विरोधी के खिलाफ एक सजग रचनाकार के तीव्र प्रतिक्रिया से संबंध है। सामाजिक यथार्थ की अभिव्यक्ति जितनी सक्षमता से नागार्जुनने अपने काव्य में की है, उतनी शायद ही किसी अन्य कवी ने की होंगी। निश्चित ही कहा जाता है की, प्रगतिशील कविता के प्रमुख चितेरे के रूप में नागार्जुन को देखाजा सकता है।

संदर्भ :

१) प्रतिनिधी कविताएँ - नागार्जुन -
२) प्रगतिशील हिंदी कविता - डॉ. रणजीत
३) साहित्य की समस्याएँ - श्री. शिवदानसिंह
४) नागार्जुन एक अध्ययन - डॉ. ललिता आरोड़ा
५) प्रतिनिधि कविताएँ - नागार्जुन -